E content for the Student of Patliputra University

Subject - Political science

Class B.A. (Hons.) Part - I Paper - I

Topic - Traditional Political science Nature and Scope

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Professor, Pol. Sc.
R.R.S. College, Mokama.

विकास के विभिन्न चरणों को पार करता हुआ, व्यक्ति, समाज तथा राज्यव्यवस्था के अन्तर्सम्बन्धों के अध्ययन के क्षेत्र, प्रक्रिया एवं व्यापकता को देखते हुए राजनीति विज्ञान को परम्परागत एवं आधुनिक के रूप में विभाजित किया जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि आधुनिक राजनीति विज्ञान के आगमन के साथ परम्परागत राजनीति विज्ञान की प्रासंगिकता समाप्त हो गई। सच्चाई यह है कि परम्परागत राजनीति की मजबूत नींव पर ही आधुनिक राजनीति विज्ञान की अट्टालिकाएँ बड़ी हैं। यह तो अध्ययन के विकास का क्रम है, जिस आधार पर पुरानी या परम्परागत और आधुनिक या अत्याधुनिक के रूप में विभाजित किया जाता है।

परम्परागत राजनीति विज्ञान का महत्व इस बात में निहित है कि विश्व विद्या या ज्ञान के कुछ क्षेत्रों में राजनीतिविज्ञान भी एक सभ्यता एवं संस्कृति में उपलब्ध था। परम्परागत राजनीति-विज्ञान के अध्येता यह बतलाने में कामयाब हैं कि व्यक्ति एक राजनीतिक प्राणी है, जन्म से लेकर मरण तक किसी न किसी रूप में उसकी सक्रियता बनी रहती है। कौटिल्य का "अर्थशास्त्र", प्लेटो का "रिपब्लिक," अरस्तू का "पॉलिटिक्स" आदि अनेक कालजयी रचनाएँ

न केवल परम्परागत राजनीति का बल्कि आधुनिक राजनीति विज्ञान में भी महत्ता बनाये हुए हैं। प्लेटो के "आदर्श राज्य" एवं 'दार्शनिक शासक' की अवधारणा, अरस्तु "सरकार का वर्गीकरण", "क्रांति" संबंधी विचार तथा कौटिल्य में राजा का दायित्व "जनता का कुशलक्षेम" आदि में अन्तर्निहित भाव यही है कि राज्य एवं शासक का उद्देश्य जनता की भलाई एवं हित-साधना है। अर्थात व्यक्ति साध्य है, राज्य उसका साधन। इस प्रकार परम्परागत राजनीति विज्ञान को नजरअंदाज करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

पारिभाषिक धारणा

परम्परागत राजनीति विज्ञान की परिभाषा तीन संदर्भों में दी जाती है—

(i) राज्य का अध्ययन — अधिकांश लेखकों ने राजनीति विज्ञान को राज्य के ~~रूप में~~ अध्ययन के विषय के रूप में परिभाषित किया है। गार्नर, गेटेल, ब्लंशली आदि ने इसी संदर्भ में परिभाषित किया है। गार्नर के अनुसार – Political science begins and ends with state. इनके अनुसार राज्य के अभाव में राजनीति विज्ञान की कल्पना नहीं की जा सकती है।

(ii) सरकार के अध्ययन के रूप में — राजनीति विज्ञान के कुछ विद्वानों ने यह मत प्रकट किया है कि राज्य एक अमूर्त संस्था है, सरकार उसे मूर्त रूप देती है। राज्य का भौगोलिक और भौतिक स्वरूप महत्त्वहीन है, महत्वपूर्ण है उसे चलाने वाली सरकार। अर्थात राजनीति विज्ञान राज्य को मूर्त रूप देने वाली संस्था सरकार का अध्ययन करता है।

सीले के अनुसार जिस प्रकार भौतिकविज्ञान ऊर्जा का, अंक गणित अंकों का ज्यामिति रेखाओं और आकार का अध्ययन करता है, उसी प्रकार राजनीतिविज्ञान सत्ता का अध्ययन करता है।

(iii) राज्य एवं सत्ता दोनों का अध्ययन - राजनीति विज्ञान को अलग-अलग राज्य और सत्ता के रूप में परिभाषित करने में कुछ कमियाँ, असंगतियाँ रह जाती थी। सच्चाई यह है कि राज्य एवं सत्ता दोनों ही एक सिक्के के दो पक्ष हैं। अतः राजनीतिविज्ञान को राज्य एवं सत्ता दोनों का अध्ययन करना चाहिए। इस आधार पर पॉल जेनेट ने परिभाषित करते हुए बतलाया कि राजनीति विज्ञान राज्य एवं सत्ता दोनों का अध्ययन करता है।

अध्ययन का क्षेत्र

परम्परागत राजनीतिविज्ञान के अध्ययन का क्षेत्र आधुनिक राजनीतिविज्ञान की तुलना में संकुचित रहा। कुछ हद तक अध्ययन के आधार भी भिन्न रहे। अध्ययन क्षेत्र का विश्लेषण निम्न रूप में किया जा सकता है-

(1) राज्य के स्वरूप का अध्ययन - इसमें राज्य के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। राजतंत्र, अधिनायकतंत्र, प्रजातंत्र आदि का अध्ययन राजनीति विज्ञान करता है।

(ii) राज्य की उत्पत्ति के सिद्धांत - राजनीतिविज्ञान राज्य की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांतों -- दैवी सिद्धांत, शक्ति सिद्धांत, सामाजिक समझौते का सिद्धांत, विकासवादी सिद्धांत, मार्क्सवादी सिद्धांत आदि का अध्ययन किया जाता है।

(iii) राजनीतिक विचारों एवं सिद्धांतों का अध्ययन -- परम्परागत राजनीति विज्ञान में राजनीतिक विचारों, सिद्धांतों एवं दर्शनों के अध्ययन

पर बल देता है, मार्क्सवाद, समाजवाद, गाँधीवाद फासीवाद एवं अनेक दार्शनिकों के विचारों का अध्ययन प्रमुखता से किया जाता रहा है।

(iv) सरकार के स्वरूप का अध्ययन – परम्परागत राजनीति विज्ञान में सरकार के स्वरूप – लोकतंत्र, संसदीय शासन प्रणाली, अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली, न्यायपालिका, मौलिक अधिकार, स्थानीय स्वशासन, राजनीतिक दल, चुनाव आदि का अध्ययन किया जाता रहा है।

(v) संविधान का अध्ययन – परम्परागत राजनीति विज्ञान सरकार की शक्ति का स्रोत संविधान को मानता था। अतः संविधान द्वारा प्रदत्त प्रावधानों के अध्ययन पर बल दिया जाता रहा।

(vi) राजनीतिक घटनाक्रम का ऐतिहासिक अध्ययन – परम्परागत राजनीति विज्ञान में ऐतिहासिक घटनाक्रम अध्ययन का मुख्य विषय वस्तु होता था। उद्देश्य था कि ऐतिहासिक ज्ञान हमें भविष्य के निर्णय के लिए उपयोगी होगा।

(vii) अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों एवं संस्थाओं का अध्ययन – परम्परागत राजनीति विज्ञान में विभिन्न देशों के पारस्परिक संबंधों, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा संधियों एवं समझौतों का अध्ययन करता है।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि पारम्परिक राजनीति विज्ञान एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में विकसित हो रहा था। यह सच है कि उन दिनों राजनीति विज्ञान में अन्तर अनुशासन के विषय – धर्मशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र वर्तमान में इसका स्थान – मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र आदि। ये विकासक्रम का प्रतिफल है।